सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीतिअपार्टमेंट ,आई.पी.एक्सटेंशन,

पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: २०२५-२६

कक्षा:-8	विषय: पाठ्यपुस्तक	पाठ:2

मौखिक कौशल

1. लेखक के कार्यालय में चार चपरासी काम करते थे।

2. गरीब बड़े बाबू के लिए अपने घर से कुछ नहीं लाता था इसलिए बड़े बाबू ने गरीब को मक्खीचूस कहा था।

3. जब गरीब अपने घर से खाने-पीने की चीजें लाने लगा तब उसका कार्यालय में मान-सम्मान होने लगा।

4. गरीब ने ठेलेवालों से दलाली के रूप में चार आने लिए थे।

लिखित कौशल

1. (क) गरीब लेखक के कार्यालय में चपरासी था। वह बेचारा बहुत ही सीधा, बड़ा आज्ञाकारी, अपने काम में चौकस रहने वाला, घुड़कियाँ खाकर चुप रह जाने वाला इनसान था।

(ख) गरीब के घर मनों दूध होता है, मनों जी, चना, मटर होती थी लेकिन वह इन सब चीजों को किसी को देता तक नहीं था। कार्यालय के लोग इन सब चीजों के लिए तरसते थे इसलिए वे लोग गरीब से चिढ़ते थे।

(ग) एक दिन बड़े बाबू ने गरीब से अपनी मेज साफ़ करने को कहा। वह तुरंत मेज साफ़ करने लगा। देवयोग से झाड़न का झटका लगा तो दवात उलट गई और रोशनाई मेज पर फैल गई। बड़े बाबू यह देखते ही क्रोधित हो गए।

(घ) लेखक ने गरीब को समझाया, "भला एक दिन कुछ लाकर दो तो, फिर देखो कि लोग क्या कहते हैं। शहर में ये चीजें बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। इन लोगों का जी भी तो कभी-कभी ऐसी चीज़ों पर चला करता है।"

(ङ) लेखक के समझाने पर गरीब अपने घर से मटर की फलियाँ, गन्ने के गट्ठर तथा गन्ने का रस लेकर कार्यालय में आया। फिर उसके बाद यह दसवें-पाँचवें दिन दूध, दही आदि लाकर बड़े बाबू को भेंट किया करता।

(च) 'गरीब' से 'गरीबदास' बन जाने पर उसके स्वभाव में भी कुछ तबदीली पैदा हुई। दीनता की जगह आत्म-गौरव का उदय हुआ। तत्परता की जगह आलस्य ने ले ली। वह अब कभी-कभी देर से कार्यालय आता। कभी-कभी बीमारी का बहाना करके घर बैठा रहता। उसके सभी अपराध अब क्षभ्य थे।

(छ) गरीब ने ठेलेवालों से दलाली ली जिसे देखकर लेखक को खेद हुआ।

मूल्यपरक प्रश्न

1. इससे पता चलता है कि लेखक सहृदय थे तथा अन्याय के खिलाफ़ आवारा उठाना जानते थे।

2. बड़े बाबू ऊपरी दिखावा कर रहे थे। कोई यह न समझे कि वे सारा माल खुद हड़पना चाहते हैं, उन्होंने कृत्रिम क्रोध दिखाया। वे यह भी दिखाना चाहते थे कि उन्हें इन सब चीजों की जरूरत नहीं है।

3. इससे गरीब के बारे में पता चलता है कि वह रिश्वत देना तथा चापलूसी करने का हुनर सीख गया था। वह बड़े बाबू को सौगात देकर अपना काम करवाना सीख गया था। उसने तरक्की पाने का गलत रास्ता चुना था।